1.13.

राष्ट्रीय सहारा

30/3/12

इतिहास जानने को अभिलेखों का अध्ययन जरूरी

वाराणसी (एसएनबी)। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ भट्टाचार्य ने कहा कि भारतीय इतिहास के उद्धार के लिए लिपिविज्ञान, पांडुलिपि और अभिलेखो का सम्यक अध्ययन किया जाना आवश्यक है। प्रो. भट्टाचार्य इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं बीएचयू संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में सामनेघाट स्थित ज्ञान प्रवाह में 'पांडुलिपि विज्ञान एवं लिपिशास्त्र' विषय पर आयोजित द्विसाप्ताहिक कार्यशाला के समापन अवसर पर विचार व्यक्त कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि अध्ययन के लिए हमें अपनी निद्रा और आलस्य को छोड़कर चलने और आगे बढ़ने का संकल्प लेना होगा। प्रो. भट्टाचार्य ने कहा कि अभिलेखों के अध्ययन के लिए अनेक शास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार मुद्राशास्त्र के लिए भी यह अध्ययन आवश्यक होता है।

▶ 'पांडुलिपि विज्ञान एवं लिपिशास्त्र' विषय पर कार्यशाला

▶ निद्रा और आलस्य को छोड़ने का लेना होगा संकल्प

ज्ञान प्रवाह के आचार्य प्रो. नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी ने कहा कि सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति के अध्ययन के लिए प्राचीन कालीन इतिहास के लिए संस्कृत के युवा विद्वानों को आगे किया जाना आवश्यक है। युवा ही इस परंपरा को आगे बढ़ायेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (नई दिल्ली) के लोकेश विभाग के विभागाध्यक्ष डा. विजयशंकर शुक्ल ने कहा कि इस तरह की कार्यशालाओं से यशस्वी विद्वान पैदा होते है। लिपिविज्ञान और पांडुलिपि विज्ञान के लिए ऐसे उपक्रम आवश्यक हैं। समापन अवसर पर पचास प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। कार्यक्रम का शुभारंभ पौराणिक मंगलाचरण से हुआ। स्वागत प्रो. मनुलता शर्मा, संचालन डा. प्रणति घोषाल तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी ने किया।

राष्ट्रीय सहारा

अमर उजाला वाराणसी | शुक्रवार | 30 मार्च 2012

प्राचीन अभिलेखों का अध्ययन जरूरी

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। प्राचीन भारतीय इतिहास के ज्ञान के लिए जरूरी है कि निद्रा और आलस्य छोड़ प्राचीन अभिलेखों का अध्ययन हो। इसके लिए अनेक शास्त्रों को पढ़ना होगा। मुद्रा शास्त्र में भी ऐसा ही अध्ययन जरूरी है।

भारतीय इतिहास का उद्धार के लिए जरूरी है कि लिपि विज्ञान, पांडुलिपि विज्ञान और अभिलेखों का सम्यक अध्ययन हो। यह बातें बीएचयू के संस्कृत के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ भट्टाचार्य ने कहीं। वह गुरुवार को सामनेघाट स्थित ज्ञान प्रवाह में बीएचयू और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के साझे तत्वावधान में पांडुलिपि विज्ञान एवं लिपि शास्त्र द्विसाप्ताहिक कार्यशाला के समापन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। प्रो. नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी ने कहा कि संपूर्ण भारतीय संस्कृति के अध्ययन को संस्कृत के युवा विद्वानों को अग्रसर किया जाना जरूरी है। स्वागत प्रो. मनुलता शर्मा. संचालन डा. प्रणति घोषाल, धन्यवाद ज्ञापन प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने किया।

पांडुलिपि विज्ञान अभिलेखों की गोष्ठी

दैनिक जागरण
वाराणसी, 17 मार्च 2012

प्राचीन ग्रंथ ज्ञान परंपरा के आधार

वाराणसी : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं संस्कृत विभाग (बीएचयू) के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को सामनेघाट स्थित ज्ञान प्रवाह में 'पांडुलिपि विज्ञान एवं लिपिशास्त्र' विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्यवक्ता ख्यातिलब्ध विद्वान आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि प्राचीन ग्रंथों के संपादन में पांडुलिपियों का गहन अनुशीलन किया जाना जरूरी है। जैन साहित्य के विशेषज्ञ प्रो. सुदर्शन लाल जैन, लिपिशास्त्र के विद्वान प्रो. टीपी वर्मा व डॉ. नरेंद्र दत्त तिवारी ने भी व्याख्यान दिया। संचालन डॉ. प्रणति घोषाल ने किया।

आज

वाराणसी, १७ मार्च, २०१२

17.3.12

प्राचीन ग्रन्थ हमारी ज्ञान परम्पराके मूल आधार

पाण्डुलिपि विज्ञान एवं लिपिशास्त्रपर कार्यशाला में आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदीके विचार

प्राचीन ग्रन्थोंके सम्पादनमें पाण्डुलिपियोंका गहन अनुशीलन किया जाना आवश्यक है। सभी उपलब्ध पाण्डुलिपियोंका आकलन करके ग्रन्थके मूलपाठका निर्णय करना पड़ता है। किसी एक शास्त्रके ग्रन्थके सम्पादनके लिए सम्बद्ध अनेक शास्त्रोंका ज्ञान होना चाहिए। इसके अतिरिक्त संस्कृत भाषाके ग्रन्थोंका सम्पादन करनेके लिए व्याकरणका और भाषाका गहरा ज्ञान भी आवश्यक है। इस प्रकारसे सम्पादित प्राचीन ग्रन्थ हमारी ज्ञान परम्पराके आधार हैं। पाण्डुलिपि विज्ञान एवं लिपिशास्त्रपर आयोजित कार्यशालामें व्याख्यान देते हुए सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदीने ये विचार व्यक्त किये। कार्यशालाका आयोजन शुक्रवारको इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र वाराणसी प्रकल्प तथा संस्कृत विभाग कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके संयुक्त तत्वावधानमें ज्ञानप्रवाह द्वारा किया गया था। प्रोफेसर द्विवेदीने अपनी बातोंकी व्याख्या करते हुए महाकवि कालिदासके ग्रन्थोंके सम्पादनके अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये। इस अवसरपर प्राकृत और जैन साहित्यके विद्वान प्रोफेसर सुदर्शनलाल जैन वाराणसीने प्राचीन प्राकृत ग्रन्थोंके संपादनकी विधिपर प्रकाश डाला तथा लिनिशास्त्रके प्रख्यात विद्वान एवं इतिहासकार प्रोफेसर टी.पी. वर्माने ब्रह्मीलिपिके मौर्यकालसे लेकर चतुर्थ शताब्दीतकके विकासका विस्तृत विवेचन किया। डाक्टर नरेन्द्रदत्त तिवारीने प्रतिभागियोंको वैदिक छन्दोंके बारेमें जानकारी दी। संचालन डाक्टर प्रणति घोषालने की। कार्यशालाके तीसरे दिन ज्योतिविद् प्रोफेसर रामचन्द्र पाण्डेय, सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी एवं प्रोफेसर सी.एम. नीलकण्ठका व्याख्यान होगा।

16/3/12

वाराणसी, 16 मार्च 2012 दैनिक जागरण।

लिपिशास्त्र पर कार्यशाला : 60 लाख पांडुलिपियां चिह्नित

वाराणसी : रवींद्रपुरी एक्सटेंशन स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (पूर्व क्षेत्रीय कार्यालय) में पांडुलिपिविदों व लिपि शास्त्रियों का जमावड़ा हुआ। पांडुलिपि विज्ञान एवं लिपिशास्त्र विषयक कार्यशाला के उद्घाटन पर गुरुवार को वक्ताओं का कहना था कि अब तक 60 लाख पांडुलिपियों का पता चल गया है। केंद्र के कलाकोश विभाग के अध्यक्ष डॉ. विजय शंकर शुक्ल ने कहा कि पूरे देश में पांडुलिपियां बिखरी पड़ी हैं। पंजाब से लेकर असम और केरल से कश्मीर तक ये पांडुलिपियां सुरक्षित हैं। पांडुलिपियों का संग्रहण राजेंद्र लाल मित्र, हरप्रसाद शास्त्री आदि विद्वानों ने आरंभ किया था। कार्यशाला में प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, प्रो. सीताराम दुबे व प्रो. टीपी वर्मा आदि ने विचार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय सहारा

15·3·12

पांडुलिपि की सुरक्षा से होगी भारतीय संस्कृति की रक्षा

वाराणसी (एसएनबी)। गोरखपुर विवि के पूर्व कुलपति प्रो. बीएम शुक्ला ने कहा कि संस्कृत भारत की ही नहीं बल्कि विश्व की धरोहर है। यह धरोहर पांडुलिपियों में सुरक्षित है, इसलिए पांडुलिपि विज्ञान और लिपि विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है।

प्रो. शुक्ला इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं बीएचयू कला संकाय के संयुक्त तत्वावधान में करौदी स्थित पार्श्वनाथ विद्यापीठ शोध संस्थान में बुधवार को 'पांडुलिपि विज्ञान एवं लिपि शास्त्र' पर आधारित कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि पांडुलिपियों की सुरक्षा और उन पर आधारित शोध भारतीय संस्कृति में सर्वोच्च स्थान रखता है। इसी से भारतीय संस्कृति और ज्ञान की रक्षा संभव होगा। इंदिरा गांधी कला केंद्र (दिल्ली) के पूर्व अध्यक्ष प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रो. सुदर्शन लाल जैन, डा. विजय शंकर शुक्ल आदि ने विचार व्यक्त किया। संचालन डा. प्रणति गोषाल, स्वागत प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. मनुलता शर्मा ने किया। इस अवसर पर प्रो. सोमनाथ नेने, प्रो. अशोक जैन, रेणु सिंह, वागीश पाठक आदि उपस्थित रहे।

कार्यशाला संबोधित करते बीएम शुक्ला। *फोटो : एसएनबी*